स्वर्गदूत और दुष्ट आत्माएं

स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं: पाठ्यक्रम

टिप्पणियां -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय।

II. स्वर्गदूत:

क. स्वर्गदूतों से संबंधित पवित्रशास्त्र के पद।

ख. स्वर्गदूतों का स्वभाव।

कक्षा #२:

II. स्वर्गदूत: (जारी.)

ग. स्वर्गदूतों की संख्या (मात्रा) और विविधता।

घ. स्वर्गदूतों की गतिविधियाँ।

कक्षा #३:

II. स्वर्गदूत: (जारी.)

ङ. क्या आज स्वर्गदूतों की उपस्थिति और कार्य का अनुभव किया जा सकता है?

III. दुष्टात्माएं:

क. दुष्टात्मिक के क्षेत्र का परिचय।

कक्षा #४:

III. दुष्टात्माएं: (जारी.)

ख. शैतान।

कक्षा #५:

III. दुष्टात्माएं: (जारी.)

ग. दुष्टात्माएं।

परीक्षा।

स्वर्गदूत और दुष्ट आत्माएं

टिप्पणियां-

स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं: परीक्षा

संभावित २० सूत्रीय प्रश्न

१) स्वर्गदूतों की स्वभाव के तीन पहलुओं का वर्णन करें (पृष्ठ २७५, २७६)।

२) स्वर्गदूतों के तीन गतिविधियों का वर्णन करें (पृष्ठ २७८, २७९)।

३) शैतान और उसके दुष्टात्माओं के प्रति एक सही विश्वासी दृष्टिकोण का वर्णन करें (पृष्ठ २८३)।

संभावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) प्रभु का स्वर्गदूत कौन है? पवित्रशास्त्र के एक पद का प्रयोग करें (पृष्ठ २७७)।

२) करूब का क्या कार्य है (पृष्ठ २७८)?

३) पवित्रशास्त्र के एक पद का संदर्भ लें जो ये बात दर्शाता है कि वर्तमान में स्वर्गदूतों की उपस्थिति का अनुभव किया जा सकता है (पृष्ठ २७९)।

४) चार बिंदुओं की सूची बनाएँ जो शैतान के चरित्र का वर्णन करते हैं (कोई पद आवश्यक नहीं; पृष्ठ २८४)।

५) शैतान के चार मुख्य लक्ष्यों की सूची बनाएँ (कोई पद आवश्यक नहीं; पृष्ठ २८६)।

६) क्या शैतान के अपने सिद्धांत हैं? पवित्रशास्त्र के एक पद के साथ अपने उत्तर का समर्थन करें (पृष्ठ २८९)।

स्वर्गदूत और दुष्ट आत्माएं

I. पाठ्यक्रम परिचय

क. आत्मिक दुनिया वास्तविक है।

१. न्यू हेब्राइड्स द्वीप समूह के एक मिशनरी जॉन जी. पैटन ने स्वर्गदूतों की वास्तविकता के बारे में एक कहानी सुनाई:

लेखक का चित्रण:

उनका घर जंगल में था। एक रात मूल निवासियों का एक गोत्र उन पर आक्रमण करने आया। उन्होंने और उनकी पत्नी ने पूरी रात प्रार्थना की। अचानक मूल निवासी चले गए।

एक साल बाद, उसी जनजाति के मुखिया ने यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया। मिस्टर पाटन ने मुखिया से पूछा: "एक साल पहले जिस रात आप हमला करने आए थे उसी रात आपके आदमी अचानक मेरे घर से क्यों चले गए? इस सवाल से मुखिया को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "जब हमने आपके घर के चारों ओर उन सभी बड़े आदमियों को बंदूकों के साथ देखा तो हम चले गए।"

केवल उसी क्षण मिशनरी को एहसास हुआ कि उस रात उसकी सुरक्षा के लिए स्वर्गदूत भेजे गए थे।

अपना उदाहरण लिखें

२. आत्मिक दुनिया का अस्तित्व है। दुर्भाग्य से, इसके दल में गिराए गए स्वर्गदूत (दुष्टात्माएं) और साथ ही परमेश्वर के स्वर्गदूत भी शामिल हैं।[२]

टिप्पणियां -

ख. इस पाठ्यक्रम की सामग्री

१. ये पाठ्यक्रम स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है। यह एक मूलभूत पाठ्यक्रम है जिसका उपयोग अधिक व्यावहारिक पाठ्यक्रम में ले जाने के लिए किया जा सकता है और उसका नाम है "आत्मिक युद्ध"।

२. पाठ्यक्रम को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया गया है:

क. स्वर्गदूत। रीजेंट यूनिवर्सिटी[1] के प्रोफेसर डॉ. जे.आर. विलियम्स की शिक्षाओं से अनुकूलित अंश। अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है।

ख. दुष्टात्माएं।

३. पाठ्यक्रम को बाइबल अध्ययन के रूप में तैयार किया गया है पवित्रशास्त्र के कई पदों के अध्ययन के माध्यम से, हम स्वर्गदूतों और दुष्टात्मा के सिद्धांत का निर्माण करेंगे। प्रत्येक पद को देखने के लिए समय निकालें और उपयुक्त होने पर इसके प्रभावों पर चर्चा करें।

II. स्वर्गदूत।

क. स्वर्गदूतों से संबंधित पवित्रशास्त्र के पद

१. **पुराना नियम।**

क. उत्पत्ति ३:२४; १६:७-११।
ख. भजन. ३४:७; ७८:४९; ८०:१; ९१:११; १०३:२०; १४८:२-५।
ग. यशायाह ६:२, ६।

२. **नया नियम।**

क. मत्ती १:२०-२५; ४:११; १८:१०; २६:५३; २८:१-५।
ख. मरकुस १:१३; ८:३८; १२:२५।
ग. लूका १:२६-३७; २:९-१५; १५:१०; २०:३४-३६।
घ. प्रेरितों के काम १:१०, ११; ५:१९; ८:२६; १०:३; १२:७, २३; २७:२३, २४।
ङ. १ कुरिन्थियों ६:३।

टिप्पणियां -

च. कुलुस्सियों १:१६; २:१८।
छ. इब्रानियों १:७, १४; २:७।
ज. १ पतरस ३:२२।
झ. २ पतरस २:४।
ञ. यहूदा ६, ९।
ट. प्रकाशितवाक्य १:१; ५:११; १२:७; १९:१०।

चर्चा के बिंदु

उपरोक्त पदों की समीक्षा करने के बाद, चर्चा करें कि क्या आप मानते हैं कि स्वर्गदूत वास्तविक हैं या काल्पनिक। संभावित स्वर्गदूतों से मिलने की गवाही संक्षेप में बांटे।

ख. स्वर्गदूतों का स्वभाव

१. उनमें नैतिकता है।

क. कुछ पवित्र स्वर्गदूत हैं जो अच्छे हैं।
ख. कुछ गिराए गए स्वर्गदूत हैं जो कि दुष्ट हैं (देखें मत्ती २५:४१; २ पतरस २:४; यहूदा ६; प्रकाशितवाक्य १२:७-९)।

ध्यान दें: जब हम दुष्टात्माओं की शिक्षा पर अध्ययन करेंगे उस दौरान हम पाठ्यक्रम के दूसरे भाग में पतित स्वर्गदूतों पर विचार करेंगे।

ग. स्वर्गदूत नैतिक प्राणी हैं इस अर्थ में कि उन्होंने एक निर्णय लिया है। प्रत्येक स्वर्गदूत ने या तो परमेश्वर से विद्रोह करने या उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने का निर्णय किया।

टिप्पणियां

२. वे आत्माएं हैं। (देखें इब्रानियों १:१४)।

क. उनके पास शरीर नहीं है। (देखें लूका २४:३९)।

ख. वे मानवीय रूप में प्रकट हो सकते हैं। (देखें उत्पत्ति १८:२; १९:१. १०; यहोशू ५:१३. १४; मरकुस १६:५; लूका २४:४; प्रेरितों के काम १:१०; और इब्रानियों १३:२)।

ग. वे स्थान और समय के संबंध में बिना किसी सीमा के चलते हैं (देखें इब्रानियों १:७; उत्पत्ति २८:१२)।

३. वे सीमित हैं।

क. उनकी सृष्टि की गई (भजन १४८)।

१) वे परमेश्वर की सृष्टि है (कुलुस्सियों १:१६)। उनकी सृष्टि मनुष्य से पहले की गई (देखें अय्यूब ३८:४, ७ और उत्पत्ति १-३)।

ख. वे परमेश्वर की तरह सर्वव्यापी (सभी जगह उपस्थित, हर जगह कभी भी होने वाले) नहीं हैं।

ग. वे परमेश्वर की तरह सर्वज्ञानी नहीं हैं (सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाले) (मत्ती २४:३६)।

घ. वे परमेश्वर की तरह सर्वशक्तिमान (सब में सबसे सामर्थी) नहीं हैं।

ङ. वे ईश्वरीय नहीं है (देखें प्रकाशितवाक्य २२:८, ९)।

४. वे व्यक्तिगत प्राणी हैं

क. उनके नाम हैं। (लूका १:२६; यहूदा ९)।

ख. उनके पास बुद्धि और ज्ञान है।

१) वे बातचीत करते हैं। (देखें उत्पत्ति १८:१, ९, २२ और १९:१, २)।

२) वे विचार करते हैं। (देखें १ पतरस १:१२)।

३) वे समझते हैं। (इफिसियों ३:९, १०)।

ग. उनके पास आनंद है। (देखें अय्यूब ३८:७; लूका १५:१०; प्रकाशितवाक्य १९:६,७)।

टिप्पणियां _

५. वे लिंगहीन हैं।

क. उनमें कोई नर और नारी नहीं हैं (देखें मरकुस १२:२५)।

ख. उनमें विवाह नहीं होते (उन्हें प्रजनन करने की आवश्यकता नहीं)।

६. वे शक्तिशाली है। (देखें भजन १०३:२०; २ थिस्सलु. १:७)।

क. उनके कार्यों में अधिकतर शक्ति का एक बड़ा प्रदर्शन शामिल होता है। (देखें १ इतिहास २१:१४, १५; प्रेरितों. १२:२३; प्रकाशितवाक्य १४:१८)।

ख. उनकी शक्ति का प्रयोग अधिकतर परमेश्वर के लोगों की सेवा करने के लिए किया जाता है। (देखें दानिय्येल १०:१८; लूका २२:४३)।

७. वे अमर हैं। उनकी मृत्यु नहीं होती। (लूका २०:३६)।

चर्चा के बिंदु

स्वर्गदूतों की स्वभाव का बाइबल विवरण किस प्रकार स्वर्गदूतों के व्यवहार के कुछ लोकप्रिय और संवेदक विवरणों का खंडन करता है?

ग. स्वर्गदूतों की संख्या (मात्रा) एवं विविधता।

१. स्वर्गदूतों की संख्या या मात्रा (देखें व्यवस्थाविवरण ३३:२; दानिय्येल ७:९, १०; इब्रानियों १२:२२ और प्रकाशितवाक्य ५:११, १२)। वे बहुत बहुत बहुत सारे हैं!

२. स्वर्गदूतों की विविधता

क. "प्रभु का दूत।" वह स्वयं प्रभु प्रतीत होता है (देखें उत्पत्ति १६:७, १०, १३; निर्गमन ३:२, ६; न्यायियों ६:११, १४)।

चर्चा के बिंदु

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि "प्रभु का दूत" स्वयं परमेश्वर हैं जो स्वर्ग दूत के रूप में प्रकट होते हैं। आप क्या विचार रखते हैं?

टिप्पणियां

ख. प्रधान दूत: प्रधान स्वर्गदूत (देखें १ थिस्सलुनीकियों ४:१६ और यहूदा ९)।

चर्चा के बिंदु

पिछले पवित्रशास्त्र के पद "प्रधान दूत" के स्वभाव
और व्यक्ति के बारे में क्या सुझाव देते हैं?

ग. "करूब"

१) वे परमेश्वर की पवित्रता की रक्षा करते हैं (देखें उत्पत्ति ३:२४; निर्गमन २५:१८-२२; २६:३१)।

२) वे परमेश्वर के सिंहासन को उठाते हैं (देखें १शमूएल ४:४; भजन. १८:१०; यहेजकेल १)।

घ. "साराप" देखें (यशायाह ६:२) वे परमेश्वर की पवित्रता की घोषणा करते हैं और उसकी आराधना करते हैं।

ङ. ऐसा प्रतीत होता है कि स्वर्गदूतों का कुछ प्रकार का क्रम, संगठन और वर्गीकरण है (देखें कुल १:१६; मत्ती २६:५३; यहोशू ५:१४; भजन. ८९:६, ७; भजन. ८२:१; २ इतिहास १८:१८)।

चर्चा के बिंदु

विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूतों के संभावित क्रम के बारे में
आपके क्या निष्कर्ष हैं?

घ. स्वर्गदूतों की गतिविधियाँ

१. परमेश्वर की स्तुति और आराधना करना (देखें प्रकाशितवाक्य ५:११, १२ और ७:११) यह स्वर्गदूतों की प्राथमिक गतिविधि प्रतीत होती है।

२. संवाद

क. परमेश्वर की सत्यता की घोषणा करना (देखें प्रेरितों के काम ७:५३; गला. ३:१९; इब्रानियों २:२)।

ख. अर्थ बताना (देखें दानिय्येल ८:१९; ९:२३; जकर्याह १-६; प्रकाशितवाक्य १:१)।

टिप्पणियां

ग. घोषणाएं (देखें उत्पत्ति २२:१२; २२:१२; न्यायियों १३:३; मत्ती १:२०; लूका १:१३; १:२८; मत्ती २८:६; प्रेरितों के काम १:११)।

घ. निर्देशन। (देखें २ राजा १:३; मत्ती २:१३; प्रेरितों के काम ५:२०; ८:२६; १०:४, ५; २७:२४)।

३. सेवकाई (इब्रानियों १:१४ पर विचार करें)।

क. सांत्वना और आश्वासन (देखें उत्पत्ति १६:९-११; २१:१७; १ राजा १९:५; मत्ती ४:११; लूका २२:४२, ४३)।

ख. सुरक्षा और छुटकारा (देखें निर्ग. २३:२०; दानिय्येल ६:२२; प्रेरितों. ५:१९; १२:७-११)।

१) सुरक्षा (भजन ९१:११,१२)।

२) छुटकारा (भजन ३४:७)।

ग. नज़र रखना, मनुष्य की रखवाली करने वाले स्वर्गदूत (देखें मती १८:१०; भजन ३४; और ९१)।

४. ईश्वरीय न्याय का निष्पादन।

क. ध्यान दें कि १ इतिहास २१:१५, २ राजा १९:३५; और प्रेरितों के काम १२:२३ की घटनाओं में न्याय करने के लिए स्वर्गदूतों का इस्तेमाल किस प्रकार किया गया।

ख. स्वर्गदूतों की यह गतिविधि विशेष रूप से अंत के समय में देखी जाएगी (देखें मत्ती १३:४१; २ थिस्स १:७, ८; प्रका ९:१५)।

५. स्वर्गदूत परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। (देखें भजन. १०३:२० और मत्ती ६:१०).

ङ. क्या स्वर्गदूतों की उपस्थिति और उनके कार्य का आज भी अनुभव किया जा सकता है?

१. पवित्रशास्त्र निश्चित रूप से दर्शाता है कि स्वर्गदूतों की उपस्थिति और कार्य का अनुभव मनुष्य द्वारा किया जाता है और यह आज भी अनुभव किया जा सकता है।

क. भजन ३४ और ९१ (विशेषकर ३४:७ और ९१:११,१२) के आशयों पर विचार करें।

ख. समीक्षा करें इब्रा. १२:२२; इब्रा. १३:२; मत. १८:१०; और इब्रा. १:१४।

टिप्पणियां —

२. क्योंकि स्वर्गदूतों की उपस्थिति और कार्य का अनुभव किया जा सकता है, इसलिए कुछ चेतावनी देना आवश्यक है।

क. गिराए हुए स्वर्गदूत "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" के रूप में प्रकट हो सकते हैं (देखें २ कुरिं ११:१४)।

ख. गिराए हुए स्वर्गदूत लोगों को धोखा देने की कोशिश करेंगे। वे आकर और "अन्य सुसमाचार" देने की कोशिश कर सकते हैं (देखें गला. १:८)।

१) इस तरह से मॉर्मनवाद की शुरुआत हुई। मॉर्मन धर्म के संस्थापक जोसेफ स्मिथ को मोरोनी नामक एक स्वर्गदूत द्वारा "नया प्रकाशन " दिया गया था। यह मॉर्मनवाद के नाम से जाने जाने वाले झूठे संप्रदाय की शुरुआत थी।

२) इस तरह इस्लाम की शुरुआत हुई। इस्लाम धर्म को आरम्भ करने वाले मोहम्मद को एक स्वर्गदूत की ओर से "नया प्रकाशन" और निर्देश दिया गया था। यह इस्लाम के नाम से जाने वाले झूठे धर्म का आरंभ था ।

चर्चा के बिंदु

हम स्वर्गदूतों को कैसे देखते हैं, इस बारे में गला १:८ के निहितार्थ क्या हैं?

क्या यह संभव है कि हम "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" से मिलें,
गिराए हुए स्वर्गदूत वास्तव में कौन है?
इन परिस्थितियों में हम सच्चाई को कैसे पहचान सकते हैं?
१ तीमु ४:१ और १ यूह ४:१ के आशयों का अध्ययन करें और उन पर चर्चा करें।
(ध्यान दें: यह अंश प्राथमिक रूप से झूठे शिक्षकों को संदर्भित करता है,
लेकिन परीक्षण आत्माओं और उनके संदेशों पर भी लागू होते हैं)।
कलीसिया स्वयं को "झूठी आत्माओं" से कैसे बचा सकती है?)

टिप्पणियां

आत्माओं को परखना:

वर्तमान में स्वर्गदूतों की उपस्थिति और उनके कार्य का अनुभव किया जा सकता है। क्योंकि यह सच है, हमें कपटियों से सावधान रहना चाहिए।

स्वर्गदूत से मुलाकात का मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित परीक्षण लागू किए जा सकते हैं:

१. क्या स्वर्गदूत ने निर्देश या जानकारी दी जो बाइबल से अलग है या संगत नहीं है?

[याद रखें: कोई "नया प्रकाशन" नहीं है (अतिरिक्त, अलग)। बाइबल पूर्ण है (यहूदा ३ और प्रकाशितवाक्य २२:१८ जैसे पवित्रशास्त्रों पर विचार करें)।]

२. क्या स्वर्गदूत यीशु के बजाय स्वयं पर या लोगों पर ध्यान केंद्रित करते हैं?

३. क्या उनका विवरण और उनका स्वरूप बाइबल के स्वर्गदूतों के विवरण से अलग है?

४. क्या स्वर्गदूतों की गतिविधियों से संबंधित उनकी गतिविधि बाइबल के अभिलेख से अलग है?

३. यद्यपि हम जानते हैं कि आज स्वर्गदूतों की उपस्थिति और कार्य का अनुभव किया जा सकता है, हम यह भी जानते हैं कि एक "स्वर्गदूत" की उपस्थिति को परखा भी जाना चाहिए (ऊपर देखें)।

क. हम स्वर्गदूतों के सिद्धांत के संबंध में दो अत्यधिक विश्वास में से किसी एक में नहीं पड़ना चाहते हैं:

१) एक अत्यधिक विश्वास कहता है कि कोई स्वर्गदूत नहीं हैं और मनुष्य उनकी उपस्थिति का अनुभव नहीं कर सकता। यह सदूकियों की गलती है (प्रेरितों के काम २३:८)।

२) दूसरी चरम शिक्षा "स्वर्गदूतों की उपासना" का कारण बनती है (देखें कुलु. २:१८)। यह चरम शिक्षा स्वर्गदूतों और उनके दर्शन पर बहुत अधिक प्रभाव डालती है।

टिप्पणियां

ख. इस प्रकार हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि स्वर्गदूतों का अस्तित्व है और मनुष्य उनकी उपस्थिति और शक्ति का अनुभव कर **सकता है।** हम ये भी कहते हैं कि स्वर्गदूत का दर्शन कोई साधारण बात नहीं है तथा उन्हें परखा जाना चाहिए। विवेक आवश्यक है।

चर्चा के बिंदु

स्वर्गदूतों के संबंध में कोई और प्रश्न और टिप्पणियां सहित संक्षेप में चर्चा करें।

III. दुष्टात्माएं

क. दुष्टात्मा के क्षेत्र का परिचय

१. कुछ लोग इस बात का विश्वास नहीं करते कि शैतान और उसकी सेना का अस्तित्व है।

लेखक का चित्रण:

दुष्टात्माओं के अस्तित्व में विश्वास की कमी का परिणाम छुट्टियों में होता है जिससे हमारे यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में "हैलोवीन" कहा जाता है। इस दिन वयस्क और बच्चे आत्मिक दुनिया का मज़ाक उड़ाते हैं। बच्चे चुड़ैलों और छोटे शैतानों की पोशाक पहनते हैं और रात में सड़कों पर चलते हैं। लोग पार्टियाँ करते हैं जिसमें सभी दुष्टात्माओं की तरह कपड़े पहनते हैं और वे आत्मिक बातों पर हंसते हैं।

लोग क्यों सोचते हैं कि यह मज़ेदार है? एकमात्र उत्तर? अज्ञानता। वे उस गंभीर वास्तविकता को नहीं समझते जिसके साथ वे खेल रहे हैं।

दुष्टात्माओं के अस्तित्व में विश्वास की कमी के परिणामस्वरूप दुष्टात्माओं के अध्ययन और उनका विरोध करने के तरीके में रुचि की कमी भी होती है।

अपना चित्रण सम्मिलित करें:

टिप्पणियां

२. अन्य लोग शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर विश्वास करते हैं, लेकिन उनमें और उनकी गतिविधियों में बहुत अधिक रुचि रखते हैं। वे लगातार दुष्टात्माओं की गतिविधि का अध्ययन और बात करते हैं और उनके प्रगटीकरण का अनुभव करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

क. इस प्रकार के लोग शैतान और उसके धोखे के चपेट में आ सकते हैं।

ख. वे आसानी से दुष्टात्मिक गतिविधियों में फंस जाते हैं क्योंकि उनकी रुचि उसमें बहुत अधिक है।

३. शैतान इस बात की चिंता नहीं करता कि इनमें से कौन-सा अधिक विश्वास उसके बारे में आपके विश्वास को आकार देता है। दोनों त्रुटियाँ हैं, और शैतान जानता है कि वह लोगों के दोनों समूहों के जीवन को सफलतापूर्वक प्रभावित कर सकता है।

४. मसीहियों को शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के बारे में सही दृष्टिकोण रखने की ज़रूरत है।

क. उनका अस्तित्व हैं। वे हमारे विरोधी हैं। उनके बारे में उसी प्रकार से अध्ययन करना आवश्यक है जिस प्रकार एक युद्ध में अपने शत्रु के बारे में जानना जरूरी है।

ख. फिर भी, हमारा **ध्यान** केवल अपने शत्रु पर नहीं हो सकता। हमारा **ध्यान** अपने सेना के प्रधान, यीशु मसीह पर होना चाहिए।

१) हमें दुष्टात्माओं के अध्ययन में बहुत अधिक रुचि नहीं लेनी चाहिए। हमें इसे अपने अध्ययन का केंद्र नहीं बनाना चाहिए, बल्कि हमें अच्छी तरह से इसके बारे में सूचित होने का प्रयास करना चाहिए।

२) हमें दुष्टात्माओं को प्रकट होते देखने में अपनी रुचि विकसित नहीं होने देनी चाहिए। हमें दुष्टात्माओं की खोज नहीं करनी चाहिए या उनकी गतिविधि का अनुभव करने की इच्छा नहीं रखनी चाहिए।

ग. हमें संतुलित होना चाहिए। हमें दुष्टात्माओं को समझने की आवश्यकता है, लेकिन हमें उनमें "रुचि रखने" की आवश्यकता नहीं है।

१) हम इस पाठ्यक्रम में स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के सिद्धांत का निर्माण करना जारी रखते हैं।

२) हम शैतान और उसके दुष्टात्माओं को समझना चाहते हैं ताकि हम उनसे लड़ने के लिए तैयार हो सकें। हम उनमें रुचि नहीं लेना चाहते हैं।

टिप्पणियां

चर्चा के बिंदु

आपकी संस्कृति और पृष्ठभूमि में दो चरम सीमाओं में से कौन सा सबसे सामान्य है? एक परिपक्व मसीह के रूप में, आपको शैतानी आत्मिक दुनिया के बारे में अपने व्यवहार और विश्वासों को बदलने के लिए कैसे विवश किया गया है?

ख. शैतान

१. शैतान की उत्पत्ति

क. वह परमेश्वर द्वारा सृजा गया (देखें अय्यूब ३८:४-७ और कुलु. १:१५-१८)।

ख. पाप करने से पूर्व वह सिद्ध था। (देखें यहेज. २८:११-१९)।

ग. अपना घमण्ड प्रकट करने के बाद वह स्वर्ग से गिर पड़ा (देखें यशा. १४:१२-२०)।

घ. वह गिरे हुए स्वर्गदूतों में सबसे बड़ा था। (देखें. प्रका. १२:७-९)।

२. शैतान का चरित्र

क. वह झूठ का पिता है (देखें यूहन्ना ८:४४)।

ख. वह बहुत ही चतुर और चालाक है (देखें उत्पत्ति ३:१ और २ कुरिन्थियों ११:३)।

ग. वह एक निंदक है (देखें अय्यूब १:९)।

घ. वह उग्र है (देखें लूका ८:२९)।

ङ. वह धोखेबाज है (देखें २ कुरिन्थियों ११:१४ और प्रका. १२:९)।

च. वह शक्तिशाली है (देखें इफिसियों २:२)।

छ. वह घमण्डी है (देखें १ तीमुथियुस ३:६)।

ज. वह डरपोक है (देखें याकूब ४:७)।

झ. वह दुष्ट है (देखें १ यूहन्ना २:१३)।

३. शैतान का अस्तित्व या वास्तविकता।

टिप्पणियां

क. बाइबल दावा करती है कि वह अस्तित्व में है। निम्नलिखित वचनों पर विचार करें कि कैसे बाइबल स्पष्ट रूप से दावा करती है कि एक शैतान है: १ इतिहास २१:१; भजन संहिता १०९:६ और १ पत. ५:८, ९)।

ख. यीशु ने उसे वास्तविक माना (देखें मत्ती ४:१-११; लूका १०:१८; १३:१६)।

ग. प्रेरितों ने शैतान को एक वास्तविक, व्यक्तिगत प्राणी माना (देखें इफि. ४:२७; ६:१०-१८; १ थिस्स. २:१८; याकूब ४:७)।

४. शैतान के कार्य और गतिविधियाँ।

क. उसकी मुख्य गतिविधियों में से एक झूठ बोलना है (देखें १ यूहन्ना ३:८)।

ख. वह इस दुनिया के राज्यों पर राज करता है (देखें इफि. २:२; २ कुरि. ४:४; यूहन्ना १२:३१)।

ग. वह शक्तियों के एक संगठित और संरचित पदानुक्रम पर शासन करता है।

१) विचार करें कि इफि. ६:१०-१२ में एक संरचना कैसी प्रतीत होती है

२) विचार करें कि दानि. १०:१२-११:१ एक पदानुक्रम/संरचना को कैसे संकेत करता है।

३) मत्ती १२:२४-३० के निहितार्थों पर विचार कीजिए। यह सन्दर्भ किस प्रकार इस संसार के राज्यों के संगठन की ओर संकेत करता है?

घ. वह पतित स्वर्गदूतों को नियंत्रित करता है और पतित मनुष्य को आसानी से प्रभावित करता है।

१) पतित स्वर्गदूत। निम्नलिखित अंशों में, गिरे हुए स्वर्गदूतों (दुष्टात्माओं) पर शैतान के नियंत्रण के निहितार्थों पर विचार करें: मत्ती २५:४१; और प्रका. १२:७-१२।

२) पतित व्यक्ति के संबंध में, यूहन्ना ८:४४ में "अपने पिता शैतान" शब्दों के निहितार्थों पर विचार करें।

ङ. वह धार्मिक गतिविधियों में कार्य करता है जो कि परमेश्वर की सच्ची आराधना नहीं है (देखें २ कुरि. ११:१४; प्रका. २:९; ३:९)।

च. वह सच्ची कलीसिया का विरोधी है (देखें १ पतरस ५:८ और प्रकाशितवाक्य १२:४)।

टिप्पणियां

छ. वह सताव, क्लेश और बीमारियों का कर्ता है। (देखें लूका. १३:१६; प्रेरितों के काम १०:३८; १ कुरि. ५:५)।

ज. वह भ्रामक तरीकों से आक्रमण करता है और लोगों को पाप करने के लिए उकसाता है।

चर्चा के बिंदु

निम्नलिखित वचनों पर ध्यान दें और उन तरीकों पर विचार करें जिनके माध्यम से शैतान लोगों को धोखा देने और उन्हें पाप में फंसाने के लिए कार्य करता है: यूहन्ना १३:२; प्रेरितों के काम ५:३; १ कुरि. ७:५; २ कुरि. २:११; ११:१४; इफिसियों ४:२७; १ तीमुथियुस ३:७।

५. शैतान के लक्ष्य।

क. परमेश्वर के कार्य को नष्ट करने के लिए (देखें मरकुस ४:१५)।

ख. मनुष्यों को परमेश्वर से दूर करने के लिए (देखें अय्यूब २:४, ५)।

ग. बुराई करने के लिए (देखें यूहन्ना १३:२, २७)।

घ. मनुष्यों से आराधना पाने के लिए (देखें लूका ४:६-८; २ थिस्सलु. २:३, ४)।

६. शैतान के तरीके।

क. वह अपना भेष बदल लेता है (देखें २ कुरिं ११:१४)।

ख. वह संदेह का उपयोग करता है (देखें उत्पत्ति ३:१)।

ग. वह पवित्रशास्त्र का दुरुपयोग करता है (देखें मत ४:६)।

घ. वह युक्ति और योजनाओं का उपयोग करता है (देखें २ कुरिं २:११)।

ङ. वह लोगों को बंधन में रखने का प्रयास करता है (देखें लूक १३:१६)।

टिप्पणियां

७. शैतान की सामर्थ

क. दुष्टों पर उसकी सामर्थ

१) वे उसके "पुत्र" हैं (देखें प्रेरितों के काम १३:१० और १ यूहन्ना ३:१०)।

२) वे उसकी इच्छा पूरी करते हैं (देखें यूहन्ना ८:४४)।

३) वह उन पर नियंत्रण रख सकता है (देखें लूका २२:३)।

४) वह उन्हें अंधा कर सकता है (देखें २ कुरिं ४:४)।

५) वह उन्हें धोखा देता है (देखें प्रका २०:७,८)।

६) वह उन्हें "पकड़" लेता है (देखें १ तीमुथियुस ३:७)।

७) वह उन्हें भयभीत करता है। (देखें १ शमूएल १६:१४)।

ख. विश्वासियों पर उसकी शक्ति।

१) वह उनकी परीक्षा ले सकता है (देखें १ इतिहास २१:१)।

२) वह उन्हें पीड़ित कर सकता है (देखें अय्यूब २:७)।

३) वह उन पर दोष लगाता है (देखें जक. ३:१)।

४) वह उन्हें धोखा देता है (देखें २ कुरिं ११:३)।

टिप्पणियां —

८. शैतान के प्रति एक विश्वासी की प्रतिक्रिया।

क. हमें उसके प्रति सचेत रहना चाहिए (देखें १ पत. ५:८)।

ख. हमें उससे लड़ना चाहिए (देखें इफि ६:११-१६)।

ग. हमें उसका सामना करना चाहिए (देखें याकूब ४:७; १ पत. ५:९)।

घ. हमें उसे कोई अवसर नहीं देना चाहिए (देखें इफि ४:२७)।

ङ. हमें उसके तरीकों से अनजान नहीं होना चाहिए (देखें २ कुरिं २:११)।

च. हम इन निम्न बातों के द्वारा उस पर जय प्राप्त कर सकते हैं:

१) परमेश्वर के वचन के द्वारा (मत्ती ४:१-११; १ यूहन्ना २:१४)।

२) यीशु के नाम के द्वारा (इफि. १:१९-२२; २:६)।

३) नये जन्म और विश्वास के द्वारा (१ यूहन्ना २:२९; ३:९; ५:१-४, १८)।

४) पवित्र आत्मा के द्वारा (रोमियों. ८:१-१३; गला. ५:१५-२६)।

५) मसीह के लहू और हमारी गवाही के द्वारा (प्रकाशितवाक्य १२:११)।

९. शैतान पर मसीह की विजय।

क. इसकी भविष्यद्वाणी आरम्भ में की गई थी (देखें उत्पत्ति ३:१५)।

ख. इसका अहसास यीशु मसीह के जीवन और सेवकाई के दौरान किया गया (देखें मत्ती ४:१-११; लूका १०:१८; मरकुस ३:२७, २८)।

ग. यह तब पूरा होता है जब यीशु शैतान का न्याय करते हैं (देखें मरकुस ३:२७; यूहन्ना १२:३१; १६:११; रोमियों १६:२०; और मत्ती २५:४१)।

टिप्पणियां

ग. **दुष्टात्माएँ।**

१. दुष्टात्माओं का स्वभाव।

क. वे दुष्ट हैं (लूका १०:१७, १८ देखें)।

ख. वे सामर्थी हैं (देखें लूका ८:२९; मरकुस ५:१-१८)।

ग. वे असंख्य हैं (देखें मरकुस ५:८, ९)।

घ. वे अशुद्ध हैं (देखें मत्ती १०:१)।

ङ. वे शैतान की आज्ञा के अधीन हैं (देखें मत्ती १२:२४-३०)।

च. वे बुद्धिमान हैं। उनके पास ज्ञान है (देखें प्रेरितों के काम १६:१६; मत्ती ८:२९; लूका ४:४१)।

छ. उनके पास एक प्रकार का विश्वास है (देखें याकूब २:१९)।

ज. उनमें भावनाएँ होती हैं (देखें मत्ती ८:२९; मरकुस ५:७)।

झ. उनमें एक इच्छा, भावनाएँ और मंशा पाई जाती है (देखें मत्ती ८:२८-३१; १२:४३-४५; प्रेरितों. ८:७)।

ञ. उनके अपने सिद्धांत हैं (देखें १ तीमु. ४:१)।

२. दुष्टात्माओं की गतिविधियां और क्षमताएं।

क. वे शारीरिक और भावनात्मक दोनों तरह से बीमारी का कारण बन सकते हैं (देखें मत ४:२३,२४; ९:३२, ३३; १७:१४-२१; मरकुस ५:१-८; और ९:२५)।

ख. वे वासना के स्रोत हैं (देखें यूहन्ना ८:४४; १ यूहन्ना २:१५-१७)।

ग. वे अलौकिक शक्ति को प्रकट कर सकते हैं (देखें मरकुस ५:१-८)।

घ. वे जादू टोना और झूठी शिक्षा और झूठी भविष्यद्वाणी के स्रोत हैं (देखें १ तीमुथियुस ४:१, २; १ यूहन्ना ४:१-६; १ राजा. २२:२१-२४; २ इतिहास ३३:६; १ शमूएल १८:८-१०)।

ङ. वे मनुष्यों को अपने वश में कर सकते हैं (देखें मत्ती ८:२९)।

च. वे मृतकों की नकल कर सकते हैं (देखें १ शमूएल २८:९-१५; १इतिहास १०:१३)।

टिप्पणियां

३. दुष्टात्माओं पर एक विश्वासी की सामर्थ

क. हमने मसीह के द्वारा विजय प्राप्त की है (देखें मत्ती ८:१६, १७; १२:२८; मरकुस १६:१७; लूका १०:१७; १ यूहन्ना ४:१-६; २ तीमु. २:१; और १ यूहन्ना ५:४ और ५)।

ख. एक विश्वासी को शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से डरने की आवश्यकता नहीं है। मसीह के द्वारा हम आत्मिक युद्ध पर जय पाने में सक्षम हैं। हम विजयी हो सकते हैं।

ग. MOTMOT साथी पाठ्यक्रम, जिसका शीर्षक आत्मिक युद्ध है, इस बारे में अधिक जानकारी प्रदान करता है कि कैसे विश्वासी दुष्टात्माओं पर जयवंत हो सकता है।

टिप्पणियां

कक्षा की गतिविधि:

इस पाठ्यक्रम का अंत हम खुली चर्चा से करेंगे जिसमें हम उन दुष्टात्माओं पर चर्चा करेंगे जो कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं और उन पर चर्चा करेंगे जो कार्य करने के लिए स्वतंत्र नहीं है। प्रत्येक विषय पर चर्चा करें।

विषय #१

अध्ययन करें यहूदा ६ और २ पतरस २:४
बाइबल उन गिरे हुए स्वर्गदूतों के अस्तित्व के बारे में बताती है जो अभी भी कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं (उदाहरण के लिए, भजन ९६:५ और १ कुरिं १०:२०), और कुछ जो बंधे हुए और निष्क्रिय हैं (यहूदा ६)।

विषय #२

पढ़ें उत्पत्ति ६:१-४।
कुछ धर्मशास्त्रियों का मानना है कि यहूदा ६ के पतित स्वर्गदूतों का उल्लेख उत्पत्ति ६:२ में किया गया है। वे इन स्वर्गदूतों के कड़े दण्ड की बात को स्त्रियों के साथ उनके यौन संबंध से जोड़ते हैं (जो कि अपने स्वयं का कार्यक्षेत्र रखना नहीं था)।

विषय #३

पढ़ें १ पतरस ३:१९,२०।
कुछ धर्मशास्त्री यीशु मसीह के प्रचार को उन आत्माओं से जोड़ते हैं जो जेल में गिरे हुए स्वर्गदूतों के साथ बंधे हैं। उनका मानना है कि यीशु उस स्थान पर गए जहाँ उन्हें परमेश्वर के विजय का समाचार देने के लिए रखा गया था।

ऐसा प्रतीत होता है कि २ पतरस २:४, ५ और १ पतरस ३:१९, २० के बीच कोई संबंध है ("कैद आत्माओं" के दोहराए गए विचारों पर ध्यान दें और नूह पर भी जो कि उन आठ व्यक्तियों में से एक था जो बाढ़ से बचाया गया)।

आप क्या विचार रखते हैं?

स्वर्गदूत और दुष्ट आत्माएं

टिप्पणियां —

स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं : अंतिम टिप्पणियां

[१] जी रॉडमैन विलियम्स ,बुनियादी मसीही धर्मशास्त्र : भाग एक -कक्षा के लिए टिप्पणियां रीजेंट यूनिवर्सिटी पाठ्यक्रम द्वारा (वर्जीनिया बीच, VA:CBN यूनिवर्सिटी मीडिया सेंटर, १९८६)। "स्वर्गदूतों" से संबंधित रूपरेखा के प्रमुख बिंदुओं के प्रवाह को सीधे डॉक्टर विलियम्स की शिक्षाओं से लिया गया है। अनुमति द्वारा उपयोग किया गया है।